अन्तरा-शब्दशक्ति

हलचल

(काव्य संग्रह)

डॉ. मीनू पाण्डेय 'नयन'

हलचल

(काव्य संग्रह)

डॉ. मीनू पांडेय 'नयन'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-12-4

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८© डॉ. मीनू पांडेय 'नयन'

मूल्य: **४०.००** रुपये

आवरण: संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कंप्यूटर्स, वारासिवनी

HALCHAL (kavya-sangrah) b Dr Meenu Pandey'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

कुछ मनकही

यूँ तो मन की भावनाओं को कविता रूप में ढालना बचपन से ही अच्छा लगता था परन्तु कुछ बातों को अक्सर कापी के अंतिम पेज पर ही स्थान मिला।जब ये बात मेरे पापा को पता चली तो उन्होंने एक बहुत सुंदर सी ड़ायरी मुझे गिफ्ट की और कहा, "आज से जो कुछ लिखना है इसी में लिखा करे। एक ही भाव बार बार नहीं आते इसीलिए उनको सहेजना जरूरी है ताकि बाद में उसको परिष्कृत किया जा सके। " और बस मेरी साहित्य की नर्सरी की यात्रा इस तरह शुरू हो गई जो काफी वर्षों तक यूँ ही अनवरत चलती रही और ड़ायरी मेरी सखी का कार्य करती रही।शादी के बाद भी एक -दो साल तक यह कार्य अनवरत चला पर बच्चों के साथ कुछ यूँ उलझी कि दोनों ड़ायरियां सिर्फ अलमारी का हिस्सा बन कर रह गई । पिछले वर्ष जब मैं बीमार पड़ी तो वेड- रेस्ट करते-करते जब बड़ी बोरियत सी होने लगी । तब लगा कि कुछ लिखा जाये और यूँ ही लिखकर फेसबुक पर पोस्ट कर दिया करती थी । लोगों की सराहना मिलने लगी और मेरा उत्साह बढता गया । फिर फेसबुक पर ही कुछ साझा संग्रह प्रकाशित होने के विज्ञापन देखे तो सोचा मैं भी अपनी रचनाऐं भेजूं बस फिर क्या था एक के बाद एक, इस तरह से अब तक 22 साझा संग्रह आ गए । फेसबुक में और लोकार्पण समारोह के दौरान बहुत से कवि एवं कवयित्रियों से मुलाकात हुई और बस वही सब सीखने की प्रेरणा बनते गये।मेरे पति और बच्चों का विशेष सहयोग रहा है मुझे प्रोत्साहित करने में । प्रोग्राम के लिए साथ आने-जाने में ।बहुत खुश नसीब हूँ कि आभासी दुनिया में भी सच्चे दोस्त एवं सहेलियाँ मिली । इस प्रकार फेसबुक यूनिवर्सिटी से साहित्य में नई डिग्री हासिल कर ली ।

डॉ. मीनू पांडेय 'नयन'

अनुक्रमणिका

1. आधुनिक जीवन	5
2. नया दौर	6
3. मेरी तूलिका	7
4. घर और आँगन	8
5. भटकाव जिंदगी के	9
6. एक मुलाकात खुद से	10
7. दर्दे जिंदगी	11
8. सच्चाई प्रेम की	12
9. नाकामयाब इश्क	13
10.माँ	14
11.ममतामयी आँचल	15
12.नहीं मैं तेरे काबिल	16

आधुनिक जीवन

लगी है कैसी लाचारी, ये दुनिया थी जो फुलवारी।
समय से टूट कर हारी,मिट्टी में मिल गई सारी।

कभी हममें भी जोश था, अब्बल दर्जे का होश था।
कोने में घुलकर मर रही,लगी है जबसे बीमारी।

किसे अब हम कहें अपना,दूर का हैं सब सपना।
पास रहता नही पलभर,सही उम्र भर जिसे पाने महावारी।

दोष क्या काल को देवें, नाम अब किस किस का लेवें।
काटते सब अधजगी रातें,कैद में है दुनिया हमारी।

बचपन हैवानियत खा रही,लोरी कामवाली सुना रही।
जवानी नशे में जा रही, बुढ़ापे में है लाचारी ।

नया दौर

चलो अब जिदंगी से एक,फिर सवाल हो जाऐ।
जीना है तो कैसे जिऐ, जब जिंदगी मुहाल हो जाऐ।

नही मालूम क्या होगा, हमारे अगले पल का।
कम से कम इस पल का तो,इश्तकवाल हो जाऐ।

रोते हैं बिलखते है, ये ऑसूं नहीं रुकते।
सूख जायें अगर ऑसूं, तो धमाल हो जाऐ।

वो जो हमसफर थे कल,अजनबी बन बैठे है।
गर हम भी भुला दें, तो कमाल हो जाऐ।

है बेहतर दूर ही रहना, हवस के ऐसे दरिंदो से।
जिनकी निगाहें अगर छू लें,तो बवाल हो जाऐ।

नशे में आजकल रहना, हर एक का शौक सा है।
हम भी नशा कर लें, तुम्हारी आबरू निहाल हो जाऐ।

समय कुछ इस कदर बदला,कि साये साथ न देते।
लगता है इंसानियत का, न फिर से काल हो जाऐ।

मेरी तूलिका

मजा आगया हमको लिखकर ।
कलमकार से कुछ दिखकर।

मन में जो अरमान छिपे थे।
दूर कहीं तुम उनमें दिखे थे।

अब स्वप्न लोक में जाकर।
मिलेगें सपनों में आकर ।

वहीं मुझे तुम गले लगाना।
अपने मन की बात बताना।

और सुनाना अपनी कहानी।
जब से थी मैं भी दीवानी।

उन सबका उल्लेख करूंगी।
बिन बतलाये कैसे रहूँगी।

तुम ही प्रणय निवेदन करना।
माँग में सिंदूर भी भरना।

सुख दुःख मिलजुल कर बाँटेगे।
जीवन शेष संग काटेंगे ।

घर और आँगन

आँगन का बचपन से प्यार।
आँगन का हर कर्ज उधार।
देखी कितनी किलकारी है।
अब भी एकांत पर भारी है ।

छोटे-छोटे नन्हे मुन्ने ।
फैलाते थे कितने पन्ने ।
कभी बेर की गुठली ड़ाली।
कभी आई जामुन की बारी।

पर अब का ये सभ्य समाज।
भूल गया वो सारे काज।
बड़ी पापड़ अब दिखते कहां है।
ये तो शापिंग माल वाला जहाँ है।

फूलों की प्यारी क्यारी थी।
रंगो खुश्बू जाँ हमारी थी।
तुलसी मैया का बड़ा मान था।
पानी देना हमारी शान था ।

कपड़े भी लेते थे बुहार।
बातों बातों में दो चार।
बर्तन भी मिलजुल धो लेते।
थकते नहीं थे पानी खेते।

चिड़िया चहकतीं सुबह से।
आलस उड़ जाता था फुर्र से।
दातुन करते दर्शाते थे प्यार ।
ड़ालते उनको दानें चार।

सुबह-सुबह जब होती सफाई।
आसपास की चिंता सताई।
पहले कोई न उठ पाए।
इसके पहले झाड़ू लग जाए।

नही था मार्निंग वाक का फैशन।
न ही थी पतला होने की धुन।
पर चक्की चलाते मजा लगाते।
हंसी खुशी थे मठा बनाते ।

साथ-साथ रहता था परिवार।
साझा सुख दुःख साझा प्यार।
जब से गुम हुआ है आँगन ।
सबके अपने-अपने है खुशी और गम।

भटकाव जिंदगी के

जो पढ़ भी लोगे तुम , लकीरें और हाथों की।
हमारा क्या अधूरे थे, यही अपनी सौगातें है ।

मोहब्बत में फना होना,सर पटक के मर जाना।
यही किस्मत है अपनी, बची भी चंद साँसें है ।

किस्से बेहयाई के सुने होंगें कभी तुमने भी।
हम वो देख भी चुके,जो किस्सों की बातें है।

चुना तुमको था किस्मत ने,बुने फिर ख्वाब मैने भी।
मगर किसको पता था, कितनी बौनी औकातें है।

न तुमको रास आया था, मुस्कराना मेरा भी।
दुआ उस ईश की थी संग,कटी कुछ खास रातें है।

ताउम्र का भटकाव तुम्हें कहीं का न छोड़ेगा।
जल्दी ही तुम समझ लो तो,मेहर की बरसातें है ।

तुम्हें लगता नहीं अच्छा जो तुम पर समर्पित हो।
बहुत पछताओगे एक दिन,ये सच्ची सी बातें है।

एक मुलाकात खुद से

दिखावटी जामा उतार आया हूँ।
खुद को कुछतो निखार आया हूँ।
थक गयी था गमों में चूर होकर।
खुद से मिलने में यार आया हूँ।

आज मुहताज जिन्दगी नही मेरी।
अब सिर्फ उनसे खुशी नही मेरी।
जिन्दगी एक मिलती है सबको ही।
बस करने खुद ही से प्यार आया हूँ।

न मैं राधा हूँ न ही सीता हूँ।
न ही कुंती न ही यशोधरा हूँ।
क्यों रखूँ बोझ खुद को महान करने का।
इसीलिए खुद संग पहली बार आया हूँ।

दर्दे जिंदगी

जिन्दगी बोझ के सिवा कुछ भी नही।
और इस गम की दवा कुछ भी नही।

बहुत सोचा रातों को जाग जाग कर ।
इस दर्द पे मरहम सी दवा कुछ भी नही।

लोग मिलते है तो मिल लेते है हम भी।
मिलने में पहली सी अदा कुछ भी नही।

यूं तो जीवन है खुशियों का सफर।
मुझको मिला गम के सिवा कुछ भी नही।

जमाने से जो शख्स मेरा था सोचा मगर।
अब वो पराये के सिवा कुछ भी नही ।

लोग देते है जबाब चाहत का सिर्फ चाहत से।
मेरी किस्मत में बगावत के सिवा कुछ भी नही।

कल तलक ख्वाब में बैठे थे जो मोहब्बत बन कर।
अब बेवफाई के सागर के सिवा कुछ भी नही।

इतना भी कोई किसी को न बर्वाद करे।
मिले जीवन में अश्कों के सिवा कुछ भी नही ।

सच्चाई प्रेम की

साथी ऐसा दीजिए, बिन देखे प्रीत हो जाये।
देख कर जो न जमे, वो क्या साथ निभाये।

ढाई आखर प्रेम का,पढे उम्र कट जाये।
पर उनका क्या कीजिए,जो सिर्फ सूरत पर जाए।

सूरत जो ढलने लगी,खत्म हो गया प्रेम ।
फिर फाँसे नई बींदड़ी, पाने मन का चैन।

पुरखे कहते आये है,प्रेम नेह व्यापार ।
लागे तो तो चैन है,न लागे तो तकरार ।

मैं भी प्रेम पिपासू था,जब तक न था इसका ज्ञान।
आज मगर एक संत हूँ, कर के दिलो जान कुर्बान ।

प्रेम प्रेम जो खोजता, मिले नही इस पार।
घुस कर जिसमें पा लूं प्रेम,मिला नहीं वो द्वार।

ममतामयी आँचल

तुम हो मेरी आत्मा, मैं हूँ तुम्हारा राग।
कभी खत्म न हो सकता, अपना ये अनुराग।

बन गया बट बृक्ष सा,जो था तुम्हारा बीज।
तुमने ही दिलबाई है, हर नामुमकिन चीज।

जैसे जैसे बडे हुए, क्यों मिलते नहीं विचार।
पर एक परम सत्य है, मुझपर तेरा अधिकार ।

सुन लेती है बिना कहे, मेरी हर एक पुकार।
अजब है तेरा समर्पण, अजब तेरा संसार।

लेती जो तू बलैंया, कभी लगे न रोग।
गजब है तेरी प्रार्थना, गजब है तेरा योग।

जिसके सर पर साया माँ का,व्यर्थ करे है विलाप।
चरणबद्ध होने भर से,मिट जाते संताप।

नहीं मैं तेरे काबिल

नही समझ है मुझको कैसे कर्ज चुकाऊं मैं।
नहीं हूँ तेरे काबिल कैसे साथ में आऊँ मैं।

जब जब नये-नये प्रतिमान तुम हासिल करते हो।
मन ही मन तेरी तारीफें करके मुस्काऊँ मैं।

जानती हूँ मजबूरी में तुम साथ निभाते हो ।
देख के ये मजबूरी अंतर्मन तक हिल जाऊँ मैं।

तुम तो छले गये अपनों के ही हाथों बार बार।
और उसी प्रकिया को न दुहरा पाऊँ मैं।

हो तुम छैलछवीले रुतवेबाला सीना है।
मैं एक इ़रपोक सी किस तरह साथ निभाऊँ मैं।

रोकती हूँ हरदम तुमको मनमानी करने से।
जानती हूँ कि तुम्हारा दिया ही खाऊँ मैं।

साथ तुम्हारे होती कोई रौव रबीली नार।
बंचित किया मैने हर खुशी से ये भूल न पाऊँ मैं।

तुम भी कितने मौकों पर महसूस करते हो शर्म।
साथ तुम्हारा कहो फिर किस तरह निभाऊँ मैं।

नाकामयाब इश्क

कभी कभी दिल से अपनाकर ।
कभी हालात बुरे बताकर।
हर बार तो दी रुसबाई है ।
बस दिल ने मुंहकी खाई है ।

कभी लगा हमसफर बन चलता है।
कभी लगा दिखावा करता है ।
फिर मन को यूँ ही मना मना कर।
अब तक नैया पार लगाई है ।

कभी अपने भी धोखा देते है।
सोचा वो तो दुख हर लेते हैं।
हर बार हुआ है कुछ ऐसा ।
अश्कों ने ही दावत पाई है ।

अपने की खाल में भेड़िया बन ।
मेरे खून भरे आँसू की चुभन ।
जो हर पल यूँ ही रिसते रहे।
यूँ रात काट के चुकाई है ।

कोई साथ मेरा देता ही नही।
अब किस तरह से करूँ मैं यकीं।
जिसके सहारे बसंत मनाया था।
पतझड़ भी उसने जलाई है।

कल होगे तेरे कितने चर्चे ।
न चाहूँ एक पल मुझपर खर्चे।
ये तेरी माशूका की दौलत है।
किस्मत से मेरी झोली में आई है ।

माँ

ममतामयी आँचल बाली मेरी माँ है।
सारे जहान से निराली मेरी माँ है।
अपने सुख- दुख की परवाह नहीं है।
परोसे हमें सुखों की थाली वो मेरी माँ है।

जीवन के सुंदर पृष्ठों को उसने उकेरा।
तम से लड़ लड़ कर दिया नया सबेरा।
आगे बढ कर पीछे हटना नहीं है ।
दिव्य विश्वास के आगे कब रुका अंधेरा।

पड़े मुसीबत जब भी वो याद आये।
गमों के दौर में हिम्मत भर जाये।
वो एक अकेली समंदर से कम तो नहीं है।
हर समस्या का समाधान बताये।

उसके संग कैसी ये ड़ोर बंधी है ।
हर समय लगता है बस पीछे खड़ी है।
अक्स उसका मुझमें कुछ कम तो नहीं है।
उसकी छत्रछाया बहुत बड़ी है।

माँ ममतामयी खुशियों की सदा है।
हर एक माँ की अनोखी ही अदा है।
कोई भी माँ दुनिया में कम तो नहीं है।
प्यार जताने का तरीका बस जुदा जुदा है।

ओ मेरी प्यारी माँ तूं खूब खुशी पाये।
तूने हमेशा दिये सुखों के साये।
तुझसे जुदा हमारी भी दुनिया नहीं है ।
यूँ भी हमारे संग जन्म जन्म मुस्कराये।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ.मीनू पाण्डेय 'नयन'
निवास स्थान - भोपाल, मध्यप्रदेश
कार्यक्षेत्र - प्रोफेसर (अंग्रेजी)
मोबाईल नं. - 9893987434

प्रकाशन -

अंग्रेजी शिक्षण पर 11 एवं शोध पर 03 पुस्तके प्रकाशित ।
50 विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स में रिसर्च पेपर प्रकाशित।

रचनायें -

'एकल संग्रह' - थोड़ा सा रुमानी हुआ जाए , 'साझा संग्रह' - 27

पद -

प्रांतीय सचिव - राष्ट्रीय महिला काव्य मंच, भोपाल, मध्यप्रदेश।
अध्यक्ष - युवा साहित्य स्पंदन रचनाकार मंच, मध्यप्रदेश।
सचिव - बुंदेली साहित्य समिति

प्रतिष्ठा -

प्रधान संपादक - IJILS Journal
अतिथि संपादक - हिन्दी सागर पत्रिक (2017-18), साहित्य उदय, अभिव्यक्ति, अर्पण, काव्य किरण, नारी काव्य सागर, भारत के युवा कवि एवं कवित्रियॉ ।
संपादक - साप्ताहिक सौम्य संवाद बुन्देली संस्करण (समाचार पत्र)

सम्मान -

6 उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान
3 महिला गौरव सम्मान
1 शोध परक सम्मान
27 साहित्य सम्मान (राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर के)
एवं अन्य क्षेत्र सहित 40 से भी अधिक सम्मान ।

सामाजिक कार्य -

'आश्वास' संस्था के माध्यम से विद्यार्थियों की आत्महत्या रोकना।
रोजगार से संबंधित युवाओं की काउंसलिंग
मिशन फॉर मदर संस्था

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-12-4
मूल्य- 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com